विषय-सूची

क्रमांक	विवरण	पृ० सं०
	प्रस्तावना	
1	शैक्षणिक भ्रमण का उद्देश्य	1-3
2	शैक्षणिक भ्रमण से पूर्व योजना	4
3	यात्रा विवरण (दिनांक, मार्ग, स्थान, मैप)	5
4	अध्ययन स्थल (चंदौली, कर्मनाशा नदी, लतीफशाह बांध, चन्द्रप्रभा बांध, राजदरी-देवदरी जलप्रपात, मुक्कनाफॉल, मां वैष्णो शक्ति पीठ धाम)	5-9
5	उपसंहार	9-15
6		15

प्रस्तावना

यात्रा व भ्रमण ज्ञान अर्जन व सीखने का सबसे अच्छा माध्यम है। वैसे तो शैक्षणिक भ्रमण प्राचीन काल से ही चलता आ रहा है। प्राचीन काल में लोगों द्वारा पैदल, घोड़ो पर अथवा रथों पर यात्रा किया जाता था।

आधुनिक काल में भ्रमण के नये-नये साधन उपलब्ध हो गये हैं। आज मोटर गाड़ी, हवाई जहाज आदि अनेक साधन हैं। इनसे परि-भ्रमण करना आसान हो गया है और एक ही दिन में हजारों मीलों की यात्रा भी सम्भव है।

भारत विविधता में एकता का देश है जहां हर तरह के लोग अपनी अलग संस्कृति, रीति-रिवाज आदि बिखेरते मिलेंगे। उत्तर भारत में पर्यटन स्थल की कोई कमी नहीं है। भारत के पर्यटन स्थल अत्यन्त ही मंत्रमुग्ध करने वाले हैं। जहां एक तरफ रंग-बिरंगी वादियां दिखेंगी तो दूसरी ओर समुद्र की ऊंची उठती लहरें। कहीं आसमान छूने वाले पहाड़ दिखेंगे तो कहीं खिलखिलाते बगीचे। बस जरूरत है ठहर कर उन्हे समेटने की।

भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है, जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। भारत का क्षेत्रफल 3287263 वर्ग किलोमीटर है जो हिमालय की ऊंचाईयों से शुरू होकर दक्षिण के विषुवत रेखीय वर्षा वन तक फैला हुआ है। भारत की अधिकतर जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है और अब इसकी गिनती औद्योगिक देशों की श्रेणी में भी कीजाती है। यह दक्षिण एशिया में स्थित भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा देश है। भारत भौगोलिक दृष्टि से विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है।

भारत की सांस्कृतिक धरोहर बहुत सम्पन्न है। यहां की संस्कृति अनोखी है और वर्षों से इसके कई अवयव अब तक अक्षुण्ण हैं।

आक्रमणकारियों तथा प्रवासियों से विभिन्न चीजों को समेट कर यह एक मिश्रित संस्कृति बन गई है। आधुनिक भारत का समाज, भाषायें, रीति-रिवाज इत्यादि इसका प्रमाण हैं।

भारत में पर्यटन सबसे बड़ा सेवा उद्योग है, जहां इसका राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 6.23% और भारत के कुल रोजगार में 8.78% योगदान है। भारत में वार्षिक तौर पर 50 लाख विदेशी पर्यटकों का आगमन और 56.2 करोड़ घरेलू पर्यटकों द्वारा भ्रमण परिलक्षित होता है। भारत में पर्यटन के विकास के लिये पर्यटन मंत्रालय नोडल एजेंसी है और अतुल्य भारत अभियान की देख-रेख करता है।

भारत के उत्तरी भाग में स्थित **उत्तर प्रदेश** अपने समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक उत्साह के साथ महत्वपूर्ण है। भौगोलिक रूप से उत्तर प्रदेश, चरम उत्तर में हिमालय की तलहटी, केन्द्र में गंगा की समतल भूमि और दक्षिण की ओर विंध्य पर्वत माला के साथ बहुत ही वैविध्यपूर्ण है। भारत का सर्वाधिक दर्शनीय स्थल, ताज महल और हिन्दुओं का पवित्र शहर वाराणसी भी यहीं पर अवस्थित है। भारतीय संघ की सर्वाधिक आबादी वाले इस राज्य की भी एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है और उत्तर भारत के मध्य में स्थित उत्तर प्रदेश के पास, देने के लिये बहुत कुछ है। दर्शनीय स्थलों में शामिल है: वाराणसी, आगरा, मथुरा, झांसी, सारनाथ, प्रयाग, अयोध्या, दुधवा राष्ट्रीय उद्यान, सोनभद्र और फतेहपुर सीकरी।

सोनभद्र उत्तर प्रदेश, भारत का दूसरा सबसे बड़ा जिला है। सोनभद्र भारत का एकमात्र जिला है, जहां मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड और बिहार राज्य की सीमायें लगी हुई हैं। सोनभद्र जिला, मूल मिर्जापुर जिले से 4 मार्च 1989 को अलग किया गया था। यह 6,788 वर्ग किमी क्षेत्रफल में विस्तृत है। राबर्ट्सगंज जिले का प्रमुख नगर तथा जिला मुख्यालय है। सोन नदी जिले में पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है। यहां का सलखन फॉसिल पार्क दुनिया का सबसे पुराना जीवाश्म पार्क है। यह जिला औद्योगिक स्वर्ग है। इसी दृष्टि से इसे 'मिनी मुम्बई' भी कहा जाता है।

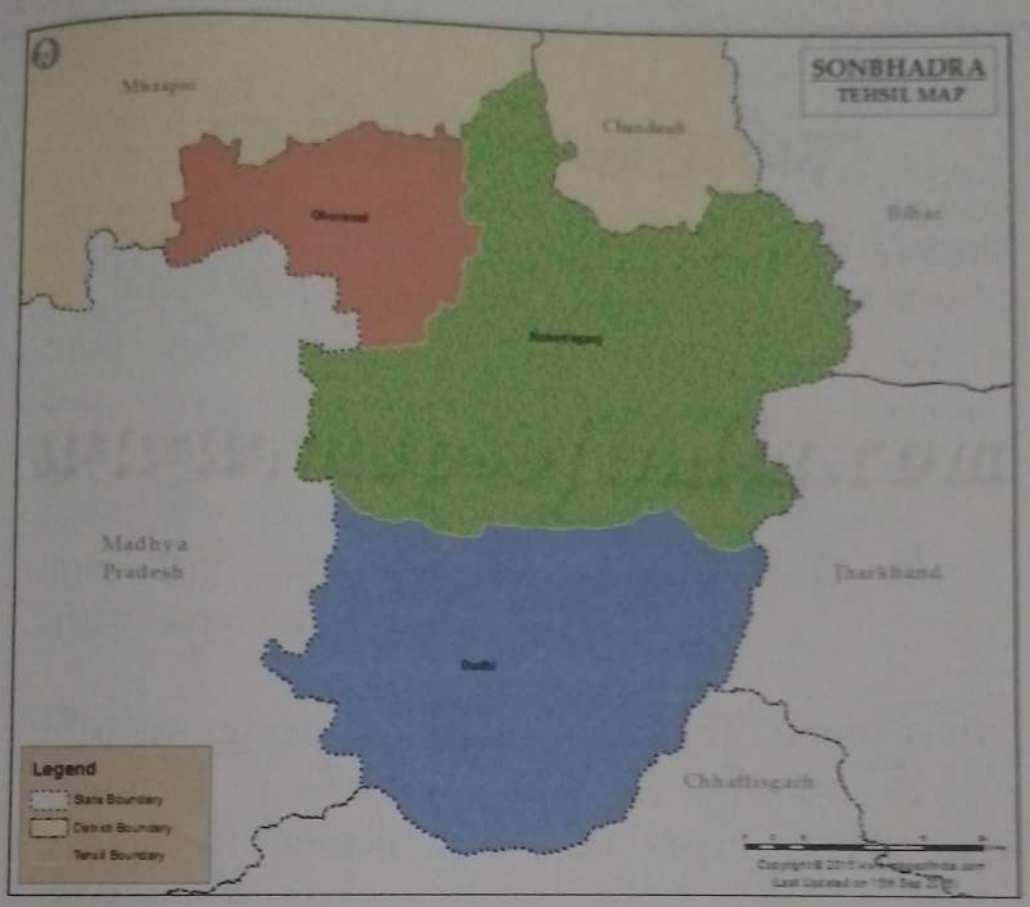
SONBHADRA
TEHSIL MAP
Mirzapur
Chandauli
Bihar
Madhya
Pradesh
Jharkhand
Chhattisgarh
Legend
State Boundary
District Boundary
Tehsil Boundary

सोनभद्र

शैक्षणिक भ्रमण का उद्देश्य

शैक्षणिक भ्रमण हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिये एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। ये भ्रमण अपने और दूसरों के अनुभव से सीखने का एक अच्छा अवसर प्रदान करता है। शैक्षणिक भ्रमण में हम अपनी आंखों से प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, जिससे ज्ञान स्थायी होते हैं और साथ ही रसानुभूति की प्राप्ति होती है और नयन सुख की प्राप्ति होती है।

शैक्षणिक भ्रमण का शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष महत्व है। शैक्षणिक भ्रमण में मनोरंजन के माध्यम से सीखना शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम है।

शैक्षणिक भ्रमण से हम प्रकृति की सुन्दरता से रु-ब-रु होते हैं।

मानव की सुन्दर कलाकृतियों से परिचित होते हैं। साथ ही साथ कुदरत की कुछ रहस्यों से भी परिचित होते हैं।

शैक्षणिक भ्रमण के द्वारा सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं औद्योगिक केन्द्रों का प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन कर ज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान किया जाता है। यह अध्ययन के प्रति रुचि एवं प्रेरणा को बढ़ावा देता है।

शैक्षणिक भ्रमण से पूर्व योजना –

जब हम यात्रा के लिये जाते हैं तो उससे पूर्व हमें योजना बनानी पड़ती है। हमारे प्राध्यापक द्वारा शैक्षणिक भ्रमण से पूर्व भ्रमण का स्थान तथा उसमें आने वाले खर्च की जानकारी दी गई। भ्रमण वाले दिन से एक दिन पूर्व हम सभी ने भोजन, दवा, पानी, बैग आदि की पूर्व योजना कर ली। भ्रमण में किसी भी प्रकार की अनावश्यक वस्तुएं नहीं ले गये।

यात्रा का विवरण

हमारी शैक्षणिक भ्रमण यात्रा दिनांक 15 नवम्बर 2023 को हमारे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय से शुरू हुई। हमारी यात्रा गाज़ीपुर से शुरू होकर सोनभद्र के रेणुकूट तक जानी थी।

दिनांक 15 नवम्बर को हम सभी छात्रायें तथा प्राध्यापक सुबह 5:30 तक महाविद्यालय के प्रांगण में उपस्थित हो चुके थें। बस भी हमारे महाविद्यालय पहुंच गई। बस के पहुंचते ही मेरी खुशी का ठिकाना न रहा क्योंकि यह मेरे जीवन का पहला टूर था और मैं इस शैक्षणिक भ्रमण का आनन्द उठाना चाहती थी।

हमारे निर्देशक डॉ० संतन कुमार राम् के निर्देशानुसार हम सभी छात्राओं की गणना करने के उपरान्त सभी को बस में उचित स्थान पर बैठने का निर्देश दिया गया।

उसके उपरान्त हमारी बस ठीक 6:01 AM पर महाविद्यालय के गेट से सोनभद्र के लिये रवाना हो गई। रास्ते में हम सभी ने खुब मनोरंजन किया। हमारे प्रोफेसर डा० संतन कुमार राम हमें मार्ग में पड़ने वाले स्थलों की भी जानकारी दे रहे थें।

हम गाज़ीपुर से हमीद सेतु, जमानियां तथा सैय्यद राजा होते हुये सोनभद्र जा रहे थे। यात्रा के दौरान हम सर्वप्रथम चंदौली में प्रवेश करते हैं। मार्ग में हमने बड़ी और ऊंची पहाड़िया देखी जो अत्यन्त सुन्दर लग रहे थे। मैंने अपने जीवन में पहली बार प्रत्यक्ष रूप से पहाड़ों की सुन्दरता को देखा जिसकी कुछ तस्वीरें अपने कैमरे में कैद की। इसके पश्चात हमारी बस चकिया चन्दौली में 9:20 AM पर पहुंची। यहां पर हमने कर्मनाशा नदी पर स्थित लतीफशाह बांध को देखा। इस बांध के विषय में हमारे सर ने कुछ महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

वहां से कुछ दूरी पर स्थित चन्द्रप्रभा बांध देखने गये जो चन्द्रप्रभा नदी पर स्थित है। चन्द्रप्रभा बांध का दृश्य सुन्दर होने के साथ-साथ थोड़ा-सा भयभीत करने वाला भी था। परन्तु उस बांध से निकलने वाला जल सुन्दर लग रहा था। उसके पश्चात हम वहां से 3.5 किमी दूरी पर

पर स्थित राजदरी की पहाड़ियों से घिरे जलप्रपात को देखने के लिये 10:30 AM पर पहुंचे। वहां का दृश्य अत्यन्त ही मनोरम था। झरने से गिरने वाला जल अत्यन्त विश्रामदायक और मन को शांत करने वाला था। उसके बाद हम वहां से 5 Km दूरी पर स्थित देवदरी की ओर रवाना हुये। हमने 1 किमी की पैदल दूरी तय की और जंगल के रास्ते देवदरी जलप्रपात देखने गये। वहां हम लगभग 10:43 AM पर पहुंचे। वहां का दृश्य अत्यधिक सुन्दर था। उस जगह पर मैंने और मेरी दोस्तों ने कुछ तस्वीरें लीं और उस स्थल का विडियो भी बनाया।

उसके बाद हम सभी लगभग 12:30 PM पर सोनभद्र के लिये रवाना हो गये। देवदरी से सोनभद्र की दूरी लगभग 2 घण्टे 31 मिनट की थी। इस दौरान हमने बस में नाश्ता किया तथा थोड़ा-सा विश्राम किया। बस मुहुपुर, रार्बटसगंज, घोरावल से होते हुये सोनभद्र पहुंची सोनभद्र में स्थित मुक्खाफॉल पर हम सभी पहुंचे वहां लगभग एक से डेढ़ घण्टे तक का समय हम सबने व्यतीत किया। वहां पर झरने का जल अत्यन्त ही शीतल था। जल धारा कम होने के कारण हम सभी छात्राएं जल में उतरीं। जल के शीतलता ने हमारे दिनभर की सारी थकान को दूर कर दिया।

मुक्ताफॉल का भ्रमण कर लेने के बाद हम सभी लगभग 4:30 PM पर अपनी बस में आकर बैठ गये और वहां से रेणुकूट के लिये अपनी यात्रा शुरू की। रास्ते में हमारी बस वैष्णो माता शक्ति पीठ मन्दिर से 800 m की दूरी पर रुकी। उस समय शाम के लगभग 6:30 PM हो रहा था। 800 m की दूरी हमने पैदल तय की जिसमें हमें लगभग 8 से 10 मिनट लगें। उसके पश्चात हम वैष्णो माता शक्ति पीठ मन्दिर पहुंचे। यह दूरी हमने हाईवे से तय की जो शाम के अत्यन्त सुनसान लग रहा था। मन्दिर पहुंचने के पश्चात हम सभी ने वैष्णो माता के दर्शन किये। मन्दिर की सुन्दरता मन को मोहने वाली थी। माँ वैष्णो डाला मन्दिर के अन्दर गुफा भी है और तरह-तरह के जानवरों की मूर्तियां बनायी गयी हैं।

मन्दिर से हम रेणुकूट के सुप्रसिद्ध मन्दिर रेणुकेश्वर महादेव मन्दिर के लिये रवाना हुये परन्तु मन्दिर जाते समय रास्ते में अत्यन्त जाम होने के कारण रास्ता बन्द हो गया जिस वजह से हमें वापस गाज़ीपुर को लौटना पड़ा। जिस कारण हम सभी थोड़ा उदास हो गये।

रास्ते में आते समय हम सभी ने सोन नदी तथा रात्रि के समय शहर की रोशनी को देखा जिसे नीक-प्वाइण्ट कहा जाता है यह नज़ारा अत्यन्त ही सुन्दर था। यात्रा से वापसी के

चन्दौली

दौरान हमारी बस एक ढाबे के पास रुकी जहां सभी ने रात्रि का भोजन किया। भोजन के बाद सभी 10:30 PM तक बस में बैठ गये उसके बाद हमारी बस गाज़ीपुर के लिये निकली। अत्यधिक थकान के कारण हम सभी ने थोड़ा विश्राम किया। कुछ छात्रायें रात-भर मौज-मस्ती करती रहीं। उसके बाद हमारी बस नारायणपुर, दफी, बनारस से होते हुये गाज़ीपुर पहुंची। इस यात्रा में हमें 5 घण्टे लगें। 16 नवम्बर की सुबह 3:30 AM पर हमारी बस महाविद्यालय के गेट पर पहुंची। वहां (महाविद्यालय परिसर) पर हमने कुछ क्षण आराम किया उसके बाद सभी छात्रायें 5:30 बजे तक अपने-अपने घर लौट गईं।

अध्ययन स्थल

चन्दौली :- चन्दौली वाराणसी मण्डल का भाग है और उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में बिहार की सीमा से लगा हुआ है। कर्मनाशा नदी इस जनपद और बिहार राज्य के मध्य की विभाजन रेखा है। इसका निर्माण वाराणसी जिला से अलग करके 1997 में किया गया। चन्दौली जिले का उपनाम धान का कटोरा है। गंगा, कर्मनाशा और चन्द्रप्रभा नदियां इस जनपद की भौगोलिक और आर्थिक परिस्थितियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव रखती हैं।

कर्मनाशा नदी :- यह नदी बिहार और उत्तर प्रदेश में बहने वाली एक नदी है। यह गंगा नदी की एक उपनदी है। यह बिहार के कैमूर जिले में उत्पन्न होती है और बिहार तथा उत्तर प्रदेश की सीमा निर्धारित करती है। इसके पश्चिम में सोनभद्र, चंदौली, वाराणसी और गाजीपुर जिले हैं। कर्मनाशा नदी पर राजदरी, देवदरी जलप्रपात हैं। इस नदी पर कई सारे बांध हैं।

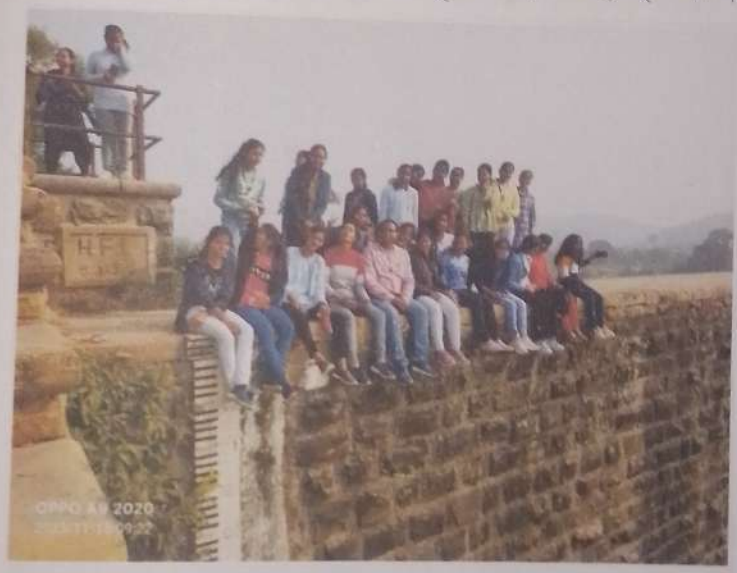

लतीफ़ शाह बांध

लतीफ़शाह बांध भारत के सबसे पुराने बांधों में से एक है। यह बांध उत्तर प्रदेश के कर्मनाशा नदी पर स्थित है। यह चंदौली के चकिया क्षेत्र में है। इस बांध के निकट ही लतीफशाह जी की

Shot on 2b

दरगाह है। उन्ही के नाम पर इस बांध का नाम भी लतीफशाह बांध रखा गया है। यह बहुत सुन्दर बांध है। इस बांध की खूबसूरती पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।
लतीफ़शाह बांध का निर्माण मुख्य रूप से सिंचाई और मानव आवश्यकता की पूर्ति के लिये किया गया है।

चन्द्रप्रभा बांध

यह उत्तर प्रदेश के चन्द्रप्रभा नदी पर स्थित है। यह वाराणसी जिले में चकिया स्थान से 19 किमी दक्षिण में स्थित है। इस बांध से निकाली गई नहरों से चकिया और चन्दौली तहसीलों की 24,000 एकड़ भूमि सींची जाती है।

इसका निर्माण कार्य 1955-60 तक में पूरा हुआ। इसकी खासियत यह है कि इसे जेल के कैदियों द्वारा बनाया गया।

Shot on 2b

राजदरी जलप्रपात

यह जलप्रपात चकिया से मात्र 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित प्राकृतिक जलप्रपात है। यह जलप्रपात चन्द्रप्रभा नदी पर बना है, जो कर्मनाशा की सहायक नदी है।

इस रमणीय स्थान को उत्तर प्रदेश सरकार ने एक पिकनिक स्पॉट के रूप में विकासित किया है।

यह जलप्रपात स्थानीय लोगों के लिये पिकनिक के रूप में काफी चर्चित है। वैसे यहां हजारों की संख्या में पर्यटक और सैलानी वर्ष भर आते रहते हैं। यहां पर उत्तर प्रदेश सरकार ने सुरक्षा के सारे इंतजाम किये हुये हैं ताकि किसी भी दुर्घटना से बचा जा सके।

यहां फोटो खींचने या सैल्फी के लिये बहुत सारे पाइण्ट बने हुये हैं।

in | Shot on 2b

देवदरी जलप्रपात

यह जलप्रपात राजदरी जलप्रपात से मात्र 500 मी० दूरी पर स्थित है, यहाँ भी प्राकृतिक झरना है, जो सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है।

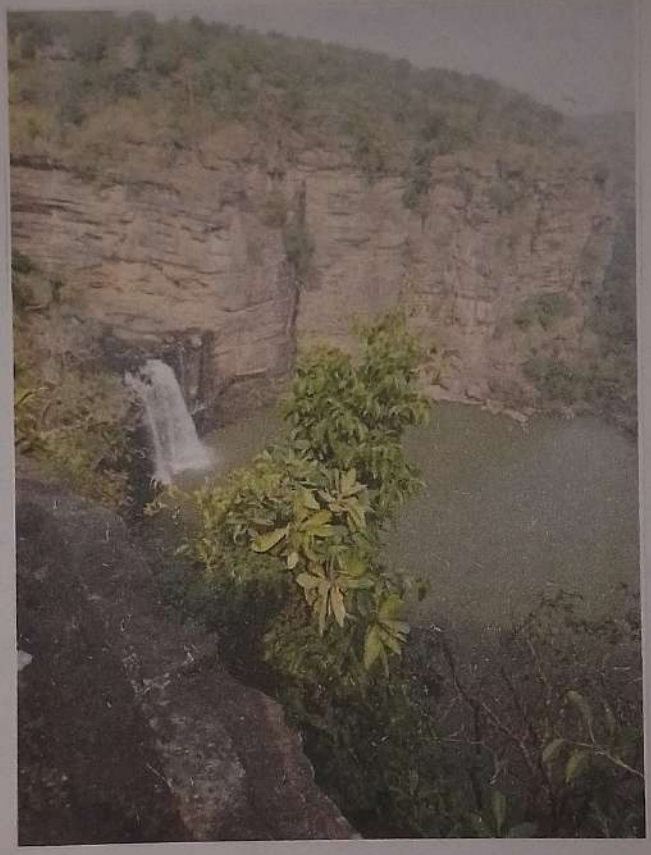

यहाँ भी सेल्फी प्वाइण्ट बने हुये हैं, जहाँ से हम फोटो अथवा सेल्फी ले सकते हैं। देवदरी पहुंचने के लिये सीधी सड़क जो देवदरी प्रपात को जायेगी निर्माणाधीन है। वर्तमान में राजदरी जलप्रपात से ही सीधे देवदरी जलप्रपात को पहुंच सकते हैं।

in | Shot on 2b

मुक्खाफॉल (सोनभद्र)

मुक्खाफॉल रॉबर्ट्सगंज से घोरावल रोड पर, रॉबर्ट्स-गंज के पश्चिम में लगभग 50 किमी और घोरावल से 15 किमी दूर उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में बेलन नदी पर स्थित है। यह उत्तर प्रदेश का एक झरना है।

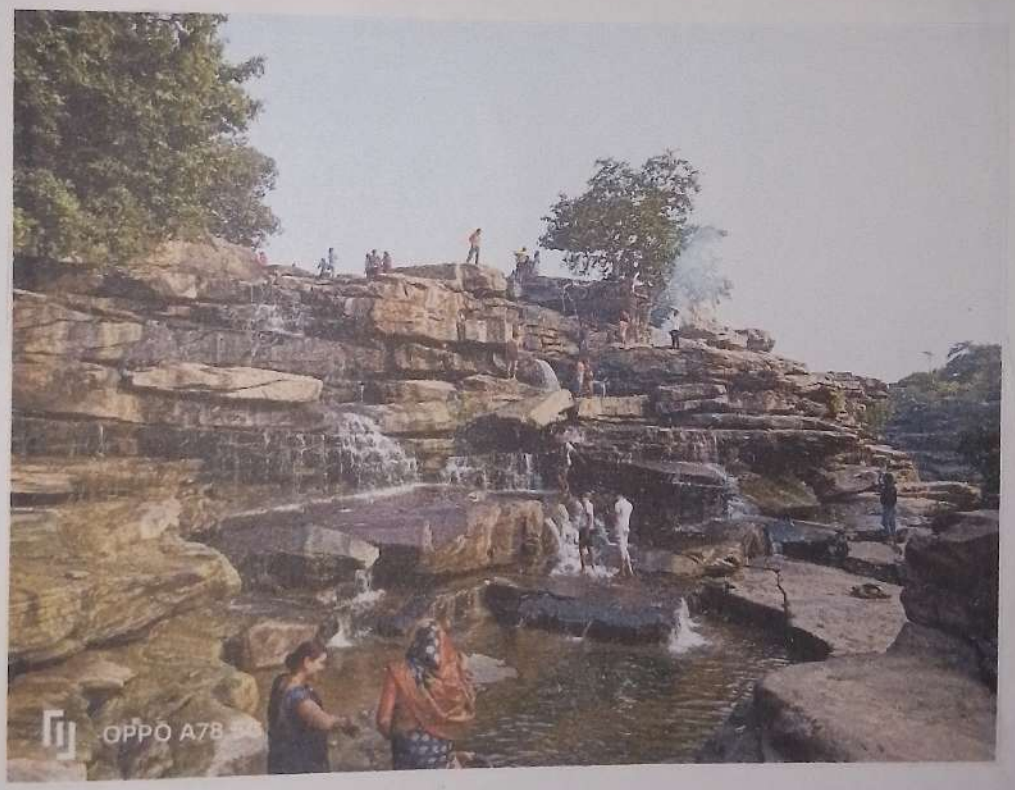

मुक्खाफॉल सोनभद्र के खूबसूरत जलप्रपात में से एक है। मुक्खाफॉल में ऊंचाई से गिरता हुआ पानी आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। इसके निकट देवी मान्दिर और कारिया ताल स्थित है जो कि सोनभद्र के दर्शनीय स्थानों में से एक है।

in | Shot on 2b

माँ वैष्णो शक्तिपीठ धाम

माँ वैष्णो शाक्तिपीठ धाम मान्दिर का स्थान विशिष्ट है यह वाराणसी शाक्ति नगर मुख्य मार्ग पर बारी डाला क्षेत्र में स्थित है। यहां कश्मीर की वैष्णो माता की तर्ज पर एक मानव-निर्मित वैष्णो मंदिर है।

यहां भी वैष्णो देवी मंदिर की तरह ही गुफा से होकर गुजरना पड़ता है। यह सोनभद्र का एक प्रमुख मंदिर है।

उपसंहार

15 नवम्बर 2023 से 16 नवम्बर नवम्बर 2023 के एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण के संदर्भ में यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि यह भ्रमण अत्यंत आर्कषक, शिक्षिक एवं मनोरंजक रहा। हमारी यह यात्रा बहुत ही ज्ञानवर्धक रही जिससे मैंने उन क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त की जिसका प्रत्यक्ष अवलोकन विद्यार्थी जीवनभेंकम ही लोगों को प्राप्त हो पाता है। इस शैक्षणिक भ्रमण से हम सभी छात्राएं पूर्णरूपेण लाभान्वित हुये।

in | Shot on 2b

अपने एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण में हमने अपनी रोजाना की दिनचर्या से हटकर नये स्थानों की यात्रा की जिससे न केवल ज्ञान वृद्धि हुई बल्कि मानसिक रूप से भी हम सुर्खरू हुये। वैसे तो इंसान जीवन भर कुछ न कुछ सीखता रहता है मगर सीखने का स्वर्ण काल तो विद्यार्थी जीवन ही है।

अपनी इस यात्रा के दौरान जब हमने चंदौली (चकिया) में प्रवेश किया तो वहां की प्राकृतिक सुन्दरता से रू-ब-रू हुये। जहां ऊंचे पहाड़ और दूर तक मैदान फैले हुये थे। इस यात्रा में हमने वहां के लोगों के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश के बारे में भी ज्ञान प्राप्त किया। यहां मानव अधिवासों की संख्या बहुत ही कम थी। चंदौली की अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। यहां धान एक प्रमुख फसल है जिस पर एक बड़ी आबादी निर्भर करती है। धान के खेत दूर-दूर तक फैले हुये थे। ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण अधिकतर मकान कच्चे (मिट्टी) थे। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहां के लोगों का जीवन अत्यन्त ही कठिन है।

in | Shot on 2b

सरकार द्वारा इन क्षेत्रों में लोगों के लिये रोजगार, शिक्षा, सुरक्षा, यातायात साधन तथा आवास की व्यवस्था की जानी चाहिये।

यहां पर पहाड़ एवं पर्वत होने के कारण अत्यधिक खनन किया जाता है। अत्यधिक खनन के कारण पर्यावरण को भी हानि होती है अतः खनन पर नियंत्रण की आवश्यकता है।

इस क्षेत्र में यातायात की सुविधाएं अधिक विकसित नहीं हुई हैं।

- सोनभद्र – जिसे औद्योगिक स्वर्ग कहते हैं। यहां के लोगों का जीवन स्तर बेहतर है। यहां की अधिकतर जनसंख्या शहरी क्षेत्र में निवास करती है। लोगों के पास रोजगार के बेहतर साधन उपलब्ध हैं।

परन्तु जिन क्षेत्रों में रोजगार विकसित नहीं हुआ है वहां के लोगों को सरकार द्वारा रोजगार उपलब्ध कराना चाहिये।

सोनभद्र की औद्योगिक गतिविधियों का लाभ सोनभद्र तथा चन्दौली की आम जनता को मिलना चाहिये।